लाइबनिज़

बुद्धिवाद की पराकाष्ठा
बुद्धिवाद की चरम सीमा

ग्रंथ

1. मॉनेडोलॉजी
2. थियोडिसी
3. प्रिंसिपल्स ऑफ नेचर एण्ड ग्रेस
4. दि डिस्कोर्स ऑफ मेटाफिजिक्स

लाइबनिज़ एक प्रसिद्ध वैज्ञानिक एवं गणितज्ञ थे। उन्होंने अनुभव किया कि विज्ञान से शरीर और गति की विभिन्न घटनाओं की व्याख्या नहीं की जा सकती।

लाइबनिज़ ने कहा कि संसार में सभी कुछ शक्ति की अभिव्यक्ति है, अतः सब कुछ सक्रिय है। अतः परम तत्त्व का अनिवार्य लक्षण शक्ति और सक्रियता है।

- शक्ति का संरक्षण सिद्धान्त → लाइबनिज़ ने माना कि शक्ति ही सरल और अविभाज्य तत्त्व है। इसी सिद्धान्त के आधार पर लाइबनिज़ ने शक्ति और गति के प्रतिरूपक मॉनेड को माना।

- लाइबनिज़ का द्रव्य सिद्धांत ही वस्तुतः चिदणुवाद कहलाता है।

चिदणुवाद (Monadology)

लाइबनिज ने जगत की व्याख्या के लिए मॉनेड (चिदणु) का सिद्धांत दिया। इसमें गणित एवं भौतिक शास्त्र का प्रभाव दिखाई देता है। भौतिक शास्त्र में अणु सबसे छोटी इकाई है, जो वास्तविक (यथार्थ) तो है पर अविभाज्य नहीं है। दूसरी ओर गणित में बिन्दु अविभाज्य तो है पर यथार्थ नहीं, अतः अणु या बिन्दु में से कोई भी द्रव्य नहीं हो सकता, क्योंकि द्रव्य वह है जो स्वतंत्र, सरल, अविभाज्य और यथार्थ हो।

लाइबनिज़ ने इसी यथार्थ एवं अविभाज्य द्रव्य को मॉनेड कहा है। मॉनेड में लाइबनिज़ ने अणु की वास्तविकता तथा बिंदु की अविभाज्यता का समन्वय किया है।

अणु = यथार्थ + विभाज्य
बिंदु = अविभाज्य + अयथार्थ

अणु = यथार्थता]
बिंदु = अविभाज्यता] Monad

लाइबनिज़ के अनुसार मॉनेड विश्व के परम द्रव्य हैं जो शक्तिरूप, शाश्वत और स्वतंत्र हैं। ये मॉनेड ही जगत के मूल कारण हैं जो एक नहीं अनेक व असंख्य हैं।

विश्व का प्रत्येक पदार्थ इन्हीं चेतन, शक्तिरूप, सरल तत्त्वों का समूह है। शक्ति का विभाजन संभव नहीं है अतः ये अविभाज्य हैं।

मॉनेड की विशेषताएँ →

मॉनेड चेतना के तात्विक बिंदु हैं जो एक ओर भौतिक अणुओं और दूसरी ओर गणितीय बिंदु से समानता रखते हुए भी उनसे भिन्न हैं।

1. **अविभाज्यता** → लाइबनिज़ के अनुसार मॉनेड द्रव्य का सरलतम रूप है और इसीलिए अविभाज्य है। इसका न कोई आकार है और न ही विस्तार। वस्तुओं और जीवों के निर्माण में मॉनेड संयुक्त और पृथक् होते हैं, पर इनसे मॉनेड स्वयं पर कोई असर नहीं होता।

2. **शाश्वतता** → लाइबनिज़ कहते हैं कि शक्तिरूप होने के कारण मॉनेड की उत्पत्ति नहीं होती अतः वे नष्ट भी नहीं होते। ये अनादि, शाश्वत और अविनाशी हैं।

3. **गवाक्षहीनता** → मॉनेड windowless अर्थात् गवाक्षहीन हैं। इनमें खिड़कियाँ नहीं होतीं जिनसे कुछ अंदर या बाहर आ जा नहीं सकता। मॉनेड में जो भी गति या परिवर्तन होता है वह उनके अपने अंदर से ही होता है। अन्य मॉनेड उन पर कोई प्रभाव नहीं डाल सकता।

4. **गतिशीलता** → शक्ति के तात्विक बिंदु होने के कारण मॉनेड गतिशील हैं। यद्यपि ये न तो किसी से प्रभावित होते हैं और न ही किसी को प्रभावित करते हैं। ये स्वयं के प्रयास से ही गतिशील होते हैं। ये सदैव चेतन और सक्रिय हैं

6. **विशिष्टता** → लाइबनिज़ कहते हैं कि प्रत्येक मॉनेड में जो कुछ भी होता है वह अन्य मॉनेडों में भी होता है, अन्तर यह है कि अपनी प्रकृति के अनुरूप प्रत्येक मॉनेड स्वयं को अभिव्यक्त करता है। इस प्रकार प्रत्येक मॉनेड स्वतंत्र, अनोखा तथा विशिष्ट है। प्रत्येक मॉनेड स्वयं में एक व्यक्ति विशेष है।

मॉनेड की क्रियाएँ → लाइबनिज़ के अनुसार मॉनेड सक्रिय द्रव्य हैं। इनमें मुख्य रूप से दो प्रकार की क्रियाएँ पाई जाती हैं →

1. **प्रत्यक्षीकरण** → लाइबनिज़ कहते हैं कि प्रत्येक मॉनेड जगत् को प्रतिबिंबित करता है, अर्थात् प्रत्येक मॉनेड में संपूर्ण जगत् दिखता है। परन्तु सभी मॉनेड जगत् का प्रत्यक्षीकरण एकसा नहीं कर पाते। कुछ अधिक व कुछ कम स्पष्ट रूप में प्रत्यक्षीकरण कर पाते हैं। अपनी चेतना की मात्रा के अनुरूप ही यह प्रत्यक्षीकरण होता है। इस प्रकार प्रत्येक मॉनेड संपूर्ण जगत् का जीता-जागता आईना है।

2. **प्रयास** → लाइबनिज़ कहते हैं कि प्रत्येक मॉनेड स्वतंत्र व गवाक्षहीन हैं। उनमें बाहर से कोई प्रभाव नहीं आ सकता। अतः वे स्वयं के ही प्रयास से गतिशील हो सकते हैं तथा विकास कर सकते हैं।

मॉनेड की श्रेणियाँ (प्रकार)

लाइबनिज़ के अनुसार चेतन परमाणु ही मॉनेड हैं। चेतना ही मॉनेड का स्वभाव है। लेकिन स्वगत चेतना की मात्रा में मॉनेडों में भिन्नता है।

प्रत्येक मॉनेड में समान चेतना नहीं है, इसी से इनमें गुणात्मक व संख्यात्मक भेद है।

चेतना के आधार पर मॉनेड की श्रेणियाँ बताई गई हैं। इसकी व्याख्या लाइबनिज क्रमबद्धता के नियम से करते हैं। इसके अनुसार चेतना के विकास की श्रृंखला है जो कम से अधिक की ओर बढ़ती है।

1. सुप्त चेतन मॉनेड → इन्हें अचेतन मॉनेड भी कहते हैं। अचेतन का अर्थ चेतना का नितांत अभाव नहीं अपितु चेतना की न्यूनतम मात्रा है। यह मॉनेड की निम्नतम श्रेणी है तथा इसमें जगत का प्रतिबिंबीकरण नहीं के बराबर होता है। संसार की सभी जड़ वस्तुएँ इन्हीं के रूप हैं।

2. उपचेतन मॉनेड → इस स्तर की चेतना स्वप्नावस्था जैसी होती है। इसमें स्मृति भी विद्यमान रहती है। ये पशुजगत और वनस्पति जगत के मॉनेड होते हैं।

3. चेतन मॉनेड → इस स्तर में चेतना जाग्रत अवस्था में होती है। ये मॉनेड मनुष्यों में पाए जाते हैं तथा इसमें प्रत्यक्षात्मक ज्ञान होता है। इसके कारण मनुष्य जगत और ईश्वर के विषय में ज्ञान प्राप्त करता है।

4. स्वचेतन मॉनेड → इसे आत्मा का स्तर कहते हैं। आत्मा का स्वभाव ही चेतना है, अतः आत्मा स्वतः ही चेतना है तथा अविनाशी है।

5. पूर्णचेतन मॉनेड → मॉनेडों के क्रम में लाइबनिज सर्वोच्च

मॉनेड अर्थात् पूर्ण चेतन मॉनेड ईश्वर को मानते हैं। ईश्वर को ब्रह्माण्ड की सभी वस्तुओं का पूर्ण बोध रहता है।

स्पष्ट है कि मॉनेड में मात्रा का भेद है, प्रकार का नहीं।

सभी स्तरों में कम या अधिक मात्रा में चेतना अवश्य रहती है। अचेतन का भी अर्थ है न्यूनतम चेतन। जो अधिक चेतन है उसमें अधिक संवेदनशक्ति है।

जगत् में विभिन्न विषयों व घटनाओं में निरन्तरता है। इस निरन्तरता में श्रेणीगत भेद है, प्रकार का नहीं। जैसे स्थिरता और गतिशीलता परस्पर नितांत भिन्न नहीं है। स्थिरता का अर्थ है सूक्ष्म गतिशीलता।

इस प्रकार लाइबनिज़ ने निष्क्रियता और सक्रियता, जड़ और चेतन, तरल और ठोस, सभी में प्रकार का भेद न मानकर मात्रा का भेद माना है। इससे वे मॉनेडों के बीच की दूरियां को कम कर देते हैं। यह सिद्धांत असंख्य मॉनेडों में तादात्म्य दिखाता है।

पूर्व स्थापित सामंजस्य

Pre established harmony

लाइबनिज के अनुसार मॉनेड गवाक्षहीन हैं अर्थात् न तो वे अन्य पर प्रभाव डाल सकते हैं और न ही किसी से प्रभावित हो सकते हैं। वे अपने ही आन्तरिक नियमों से परिचालित होते हैं

तथा वे अपने अस्तित्व एवं कृतित्व (action) स
में स्वतंत्र हैं।

अब प्रश्न है कि यदि प्रत्येक मॉनेड का कार्यक्षेत्र अलग एवं स्वतंत्र है तथा वे परस्पर प्रभाव भी नहीं डाल सकते तो विश्व में इतनी व्यवस्था, इतना सामंजस्य कैसे दिखाई देता है? सभी एक-दूसरे के सहयोगी दिखाई देते हैं।

लाइबनिज इसका उत्तर पूर्वस्थापित सामंजस्य से देते हैं। वे कहते हैं कि यह सामंजस्य ईश्वर के द्वारा सृष्टि के पूर्व ही निर्धारित किया जा चुका है।

मॉनेड की रचना करते समय ईश्वर ने ऐसी व्यवस्था निश्चित कर दी है कि सभी मॉनेडों में एक-दूसरे के समान ही क्रिया और परिवर्तन हो तथा सभी मॉनेड अपने निर्धारित मार्ग पर चलते रहें। इसलिए मॉनेड गवाक्षहीन होते हुए भी एक-दूसरे के सहचारी हैं।

उदाहरण →

1. जिस प्रकार संगीत के वाद्ययंत्रों में भिन्नता होते हुए भी एक ही स्वर की सृष्टि होती है। वाद्ययंत्रों की भिन्नता से संगीत में विषमता उत्पन्न नहीं होती। उसी प्रकार मॉनेडों में भिन्नता से विश्व की व्यवस्था नहीं बिगड़ती।

2. जिस प्रकार अनेक घड़ियों में भिन्नता होते हुए भी उनकी गति में समानता होती है। घड़ी बनाते समय ही उनकी गति और व्यवस्था निश्चित कर दी जाती है, उसी प्रकार मॉनेडों में भी।

पूर्वस्थापित सामंजस्य की विशेषताएँ →

1. इस सिद्धांत के द्वारा लाइबनिज़ आत्मा और शरीर के संबंध की व्याख्या करते हैं। ईश्वर ने दोनों में पहले से ही संबंध निश्चित कर दिया है। यद्यपि दोनों के मॉनेड अलग-अलग हैं, स्वतंत्र हैं, फिर भी दोनों सहचारी हैं।

2. इससे लाइबनिज़ जड़ और चेतन की समस्या का समाधान करते हैं। जड़ का अर्थ अत्यन्त सूक्ष्म चेतन है, अचेतन नहीं। वे दोनों को नितान्त भिन्न नहीं मानते।

आलोचना

1. एक ओर लाइबनिज़ मॉनेड को बिल्कुल स्वतंत्र तथा निरपेक्ष मानते हैं और दूसरी ओर वे मॉनेड की सभी क्रियाएँ, गति तथा परिवर्तन ईश्वर द्वारा पूर्व में ही निर्धारित मानते हैं। यह आत्मविरोधी बात है।

2. इस सिद्धांत को मजबूत बनाने के लिए लाइबनिज़ जो उदाहरण प्रस्तुत करते हैं वे संतोषप्रद नहीं हैं। ये केवल उपमा हैं, तर्क नहीं।

ईश्वर

लाइबनिज के अनुसार प्रकृति या विश्व की व्याख्या ईश्वर के बिना नहीं हो सकती। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में ईश्वर समाहित है। ईश्वर की सत्ता मानना अनिवार्य है।

1. ईश्वर सर्वोच्च मॉनेड है → मॉनेडों के विकास के क्रम में सर्वोच्च मॉनेड पूर्ण चेतन मॉनेड है, जो ईश्वर है। ईश्वर पूर्ण, असीमित और यथार्थ है।

2. ईश्वर सर्वव्यापी है → लाइबनिज के अनुसार ईश्वर संपूर्ण जगत् में व्याप्त है और यह जगत् ईश्वर की ही अभिव्यक्ति है। इसमें वे सर्वेश्वरवाद का समर्थन करते हैं।

3. ईश्वर विश्व का स्रष्टा है → यह विश्व ईश्वर की रचना है। लाइबनिज कहते हैं कि ईश्वर ने जगत् की रचना इस प्रकार की है कि उसे विश्व में बार-बार हस्तक्षेप करने की आवश्यकता नहीं पड़ती। सभी मॉनेड अपने पूर्व निर्धारित मार्ग पर व्यवस्थित चलते रहते हैं।

4. विश्व में अशुभ अनिवार्य है → लाइबनिज़ कहते हैं कि ईश्वर ने जगत् की रचना सर्वोत्तम नैतिक अनिवार्यता के आधार पर की है। अतः अशुभ भी विश्व में अनिवार्य है, क्योंकि इनसे संघर्ष करके ही व्यक्ति ऊँचा

रहता है और ईश्वर की ओर जाने का प्रयास करता है।

5. **ईश्वर पूर्ण व सर्वज्ञ है** → ईश्वर में सभी गुण श्रेष्ठतम रूप में विद्यमान हैं। वह पूर्ण है अतः उसमें अन्य मोनेडों के समान विकास और परिवर्तन नहीं होता। ईश्वर पूर्ण ज्ञानी है, वह एक ही दृष्टि में समस्त वस्तुओं को सभी कालों में देख लेता है। समस्त प्राकृतिक नियम ईश्वरीय नियम ही हैं।

ईश्वर के अस्तित्व के प्रमाण →

1. **पर्याप्त कारण से प्रमाण** → लाइबनिज कहते हैं कि विश्व का कोई युक्तिसंगत पर्याप्त कारण होना चाहिए। यह कारण स्वयं मोनेड नहीं हो सकते क्योंकि वे स्वयं सीमित और अपूर्ण हैं। अतः असीमित और पूर्ण ईश्वर ही विश्व का रचयिता है।

2. **अनुभवमूलक तर्क** → लाइबनिज कहते हैं कि ईश्वर का अस्तित्व अनुभव स्तर का है। इसके अस्तित्व में किसी प्रकार का व्यवधान नहीं है।

3. **सत्तामूलक प्रमाण** → ईश्वर का विचार पूर्ण सत्ता का विचार है। पूर्ण सत्ता में किसी भी प्रकार का अभाव नहीं हो सकता। अतः अस्तित्व का भी अभाव नहीं माना जा सकता। अतः ईश्वर की सत्ता मानना अनिवार्य है।

4. **कारणवादी तर्क** → इस तर्क के अनुसार जगत का कारण

जगत् से परे और एक होना चाहिए। यह ईश्व
ही हो सकता है।

5. निरन्तरता से तर्क → विश्व के सभी मॉनेड श्रे
से बँधे हैं तथा सर्वोच्च स
भी अवश्य होना चाहिए, जहाँ श्रृंखला पूरी हो
वही सर्वोच्च एवं पूर्ण स्तर पर ईश्वर है।

6. पूर्वस्थापित सामंजस्य से प्रमाण → मॉनेड स्वतंत्र
गवाक्षहीन हैं त
एक दूसरे को प्रभावित नहीं कर सकते फिर भी ज
में एक व्यवस्था दिखाई देती है जो ये मॉनेड
नहीं कर सकते। अतः यह सामंजस्य ईश्वर
द्वारा स्थापित किया गया है।

7. ज्ञान शास्त्रीय तर्क → विश्व में ऐसे अनिवार्य और
शाश्वत सत्य दिखाई देते हैं
जिनको बनाने वाली कोई असीमित बुद्धि ही हो
सकती है जैसे तर्कशास्त्र, प्रकृति के सत्य। यह
असीमित बुद्धि ईश्वर ही हो सकता है।

आलोचना →

1. लाइबनिज़ एक ओर ईश्वर को मॉनेडों का स्रष्टा
कहते हैं, दूसरी ओर उसे स्वयं भी मॉनेड मानते
हैं। यह तार्किक असंगति है।

2. लाइबनेज़ ने यह स्पष्ट नहीं किया कि ईश्वर और
सृष्टि में क्या संबंध है। कभी तो वे ईश्वर

को विश्व में ही व्याप्त मानते हैं, कभी विश्व से परे। अतः उनके विचारों में स्पष्टता नहीं है।